कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937

उपोष्णकटिबंधीय फलो में नियमितिकरण

देवी दर्शन[1], रीमा देवी[2] और जितेंद्र कुमार शुक्ला[3]
[1]बागवानी और वानिकी महाविद्यालय, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना, (पंजाब)
[2]खाद्य और पोषण विभाग, पीजीआरसी, प्रोफेसर जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय, राजेंद्रनगर, हैदराबाद
[3]चंद्रशेखर आजाद कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश)
ईमेल: devidarshantiwari@gmail.com

परिचय

फसल नियमितिकरण नियमित और गुणवत्ता वाली फसल का एक आधार है। कुछ फल जैसे की (अमरूद) अनार और नींबू आदिद्ध पूरे वर्ष बिना किसी आराम के फल और फूल देते हैए लेकिन सभी फ़सलों की उपज और गुणवत्ता इतनी अच्छी नहीं होती है। उत्तरी व पूर्वी भारत में पौधे दो बार फल देते है तथा दक्षिणी और पश्चिमी भारत मे तीन बार फल आते हैं जिसे अम्बे बहार मृग बहार और हस्त बहार कहते हैं।

फसल नियमितिकरण का सिद्धांत

- प्रजनन सफलता प्राप्त करने के लिए आरंभ में पौधे के लिए सबसे अनुकूल मौसम का चयन करना चाहिए।
- फसल नियमितिकरण वांछित मौसम में पौधे के प्राकृतिक फूल देने में हेरफेर करता है जो फल की उपजए गुणवत्ता और लाभ प्रदता में वृद्धि का योगदान करता है।

फसल नियमितिकरण के उद्देश्य

- दो या तीन बहार मे से किसी एक बहार को चुनना जिससे की फलो की गुणवत्ता और उपज मे वृद्धि हो।
- फलों की एकसमान और अच्छी गुणवत्ता को नियमितिकरण करना और उत्पादन के साथ.साथ उत्पादक को अधिकतम लाभ प्राप्त करना।
- खेती की लागत को कम करने के लिए क्योंकि निरंतर फल और फूल खिलने से पूरे वर्ष हल्की फसलें पैदा होंगी और निगरानी और देखभाल के लिए उच्च लागत की आवश्यकता होगी।

फसल नियमितिकरण के तरीके

- फूलों को झड़ाकर
- सिंचाई को रोक कर
- रूट एक्सपोजर और रूट प्रूनिंग
- प्रूनिंग शूट
- रासायनिकध् पादप वृद्धि नियन्त्रको का उपयोग।

e-ISSN No. 2583-0937

- शूट बेनडिंग

फूलों को झड़ाकर

- हाथ से या पादप वृद्धि नियन्त्रको का उपयोग
- पादप वृद्धि नियन्त्रक जैसे एनएएए एनएडीए 2ए4.डी कार्बेरिल और एथ्रल बारिश के मौसम फूलों को में फूलों को कम करने के लिये और विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों में सर्दियों की फसल के गुणवत्ता और उपज को बढ़ाने में मे मदद करते है।
- पादप वृद्धि नियन्त्रक एनएए 100 पीपीएम
- पादप वृद्धि नियन्त्रक एनएए 400 पीपीएम

सिंचाई को रोकना

- उत्तरी मैदानों में सर्दियों की फसल की कटाई या तूडाई के बाद सिंचाई को रोक दिया जाता है जिससे पौधे के पत्ते झड़ जाते हैं और वृक्ष सुप्तावस्था या आराम की अवस्था मे चले जाते है।
- जून के महीने में पौधे के चारो तरफ से मिटटी को निकाल कर उसमे प्रचुर मात्रा में खाद और पानी दिया जाता है
- 20-25 दिनों के बाद पेड़ में प्रचुर मात्रा में फूल आ जाते हैं

रूट एक्सपोजर और रूट प्रूनिंग

शूट बेनडिंग

विकास नियामकों का उपयोग

- नेफ़थलीन एसिटिक एसिड
- 2ए4 डाइक्लोरोफेनोक्सी एसिटिक एसिड
- जीए3
- पैक्लोबुट्राजोल और क्लोरोमेक्वेट क्लोराइड

किसी स्थान पर बहार का चयन मुख्य रूप से निम्न द्वारा निर्धारित किया जाता है।

- पोषक तत्व का उपयोग करना।
- पेड़ के तने के चारो तरफ लगभग 40.60 सेंटीमीटर के दायरे में 7 .10 सेंटीमीटर मिट्टी हटा दिया जाता है जिससे पौधे की जड़े सीधे सूर्य के संपर्क मे आती है
- फूल आने से पहले एक या दो महीने तक पानी को रोक दिया जाता है
- पानी की कमी के कारण पत्तियाँ मुरझा कर गिर जाती हैं
- वांछित बहार के फूल आने के एक महीने पहलेए जड़ों को फिर से मिट्टी और एफवाईएम के मिश्रण से ढक दिया जाता है और तुरंत सिंचाई कर दी जाती है।

शूट प्रूनिंग

- अमरूद का अंतिम भाग या नयी खिलने वाली शाखा को अम्बे बहार की फसल को हटाने के लिये अप्रैल के महीने में काट देना चाहिए।
- देश के उत्तरी भागों में बारिश के मौसम की फसल से बचने के लिए वर्तमान मौसम के वसंत फ्लश को छँटाई से हटा दिया जाता है।

- सिंचाई जल की उपलब्धता
- रोग और कीट द्वारा की गयी क्षति और घटना का विस्तार
- बाजार की मांग
- क्षेत्र की जलवायु
- बाजार में फलों की उपलब्धता
- तुलनीय पैदावार